पं० राधेश्याम कथावाचक जन्मशती

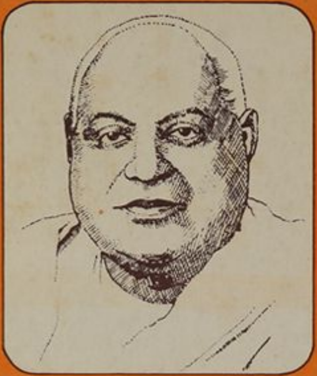

1890-1990

राज्य नाट्य समारोह-90

25 से 29 नवम्बर, 1990

संजय कम्युनिटी हॉल, बरेली

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ

सहयोग : पं० राधेश्याम कथावाचक जन्मशती समारोह समिति, बरेली

अकादमी की ओर से

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा नाटक व रंगमंच की प्रादेशिक गतिविधियों को प्रोत्साहन, विकास, संरक्षण व संवर्द्धन हेतु सतत् प्रयास करने के निमित्त अनेक योजनायें संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं में प्रमुख हैं—प्रदेश में उत्साही नाट्य-संस्थाओं को उनकी नाट्य प्रस्तुतियों के लिए "नाट्य-प्रदर्शन सहयोग योजना", प्रदेश के विभिन्न नगरों में सम्भागीय नाट्य-समारोहों की योजना, प्रदेश की श्रेष्ठ प्रस्तुतियों को लेकर राज्य नाट्य समारोह की योजना, नाट्य कार्यशाला, नौटंकी मेला, रंग-तकनीक कार्यशालायें, बाल रंगमंच विकास, पुतली रंगमंच विकास, आदि।

"राज्य नाट्य समारोह" की नियमित वार्षिक श्रृंखला का आयोजन वर्ष 1986 से आरम्भ किया गया। इस श्रृंखला का प्रथम राज्य नाट्य समारोह लखनऊ में, द्वितीय राज्य नाट्य समारोह 1987 दिल्ली में, तृतीय समारोह 1988 वाराणसी में तथा चतुर्थ समारोह 1989 कानपुर में सम्पन्न हुआ।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि इस वर्ष पांच दिवसीय 'राज्य-नाट्य समारोह–90' पं० राधेश्याम कथावाचक की जन्मशती (1890-1990) के अवसर पर बरेली में पंडित जी के जन्म दिवस पर 25 नवम्बर से आयोजित किया जा रहा है। बरेली, पारसी शैली के सुप्रसिद्ध हिन्दी नाटककार रससिद्ध पं० राधेश्याम जी की जन्म-स्थली एवं कर्मभूमि रही है। समारोह के आयोजन में पंडित जी के पौत्र श्री काशीनाथ शर्मा तथा पंडित राधेश्याम कथा-वाचक जन्मशती समारोह समिति, बरेली के अन्यान्य सहयोगियों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ जिसके लिए सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि राज्य नाट्य समारोह का यह आयोजन बरेली की रंग-प्रेमी जनता तथा नाट्य-संस्थाओं के लिए एक नये मार्ग का सूत्रपात कर रंग-चेतना विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा।

—**वि० वि० श्रीखण्डे**
सचिव

राज्य नाट्य समारोह

25 नवम्बर, 1990

नाटक : **वीर अभिमन्यु**

आलेख : **पं० राधेश्याम कथावाचक**

निर्देशन : **प्रो० बृजमोहन शाह**

संगीत निर्देशन : **श्याम अग्रवाल**

प्रस्तुति : **कला मन्दिर, ग्वालियर**

वीर अभिमन्यु

कथासार :–सुप्रसिद्ध नाटक "वीर अभिमन्यु" एक सर्वविदित पौराणिक कथा पर आधारित है। महाभारत के प्रबल संग्राम में एक अबोध और साहसी बालक के अनुपम शौर्य, अद्भुत पराक्रम की गाथा है।

पारसी हिन्दी रंगमंच के अलमबरदार पं० राधेश्याम कथावाचक द्वारा रचित यह नाटक मूलतः दो सन्देश लेकर चलता है : पहला अधूरे और अल्प ज्ञान-अनुभव का स्वामी युवा सांसारिक चक्रव्यूह से मुक्ति नहीं पा सकता, दूसरा युद्ध में शत्रु को शत्रु की चाल से परास्त किया जा सकता है, आदर्शवाद के रथ पर बैठकर नहीं।

कला मन्दिर :–ग्वालियर में 24 मार्च, 1954 को श्रीयुत मण्डेलिया जी की सद्प्रेरणा से जन्मी संस्था "कला मंदिर" आज मध्य प्रदेश में ही नहीं वरन् देश के अनेक महानगरों के रंगान्दोलन में अग्रणी रही है और प्रतिष्ठित स्थान बनाकर अपनी विकास यात्रा के 36 वर्ष पूर्ण कर चुकी है। अपनी उपलब्धियों से भरपूर यह सफर एक ऐतिहासिक दस्तावेज है जो निःसन्देह दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत हो सकता है।

मंच पर

	पात्र		भूमिका
1.	रमेश भण्डारी	—	श्रीकृष्ण
2.	नवकुमार बागची	—	युधिष्ठिर
3.	सुनील उप्पल	—	दुर्योधन
4.	अशोक दीक्षित	—	द्रोणाचार्य
5.	विजय मोड़वा	—	अर्जुन
6.	अशोक सेंगर	—	दुःशासन
7.	आनन्द गुप्त	—	भीम
8.	अनिल बिड़ला	—	जयद्रथ
9.	प्रदीप दीक्षित	—	नकुल
10.	सुखनन्दन गुप्ता	—	सहदेव
11.	दीपक गुप्ता	—	अभिमन्यु
12.	प्रणय खान बिलकर	—	कर्ण
13.	कोमल कल्याण जैन	—	शकुनि
14.	रवि मिश्रा	—	शल्य
15.	दुष्यन्त जैन	—	अश्वत्थामा
16.	राहुल गुप्ता	—	द्वारपाल
17.	शालिनी खिरवड़कर	—	सुभद्रा
18.	कृती सक्सेना	—	उत्तरा
19.	राज नालानी	—	सखी नं० (1)
20.	वसुधा तिवारी	—	सखी नं० (2)

मंच परे (नेपथ्य में)

1.	ताल वाद्य	—	मुन्ना लाल भट्ट
2.	सहयोगी	—	राहुल
3.	सरोद	—	ओम प्रकाश भार्गव
4.	सितार	—	सुदेश गौड़
5.	गायन	—	मकसूद खाँ
6.	प्रकाश	—	हरीश
7.	सहयोगी	—	सुनील वर्मा
8.	रूप सज्जा एवम् मंच व्यवस्था	—	देवेन्द्र जैन
9.	रूप सज्जा	—	वीरेन्द्र पचौरी
10.	टीम मैनेजर	—	बाबूलाल वर्मा, के० सी० वर्मा

सम्पर्क :–

श्री के०सी० वर्मा, महासचिव
कलामन्दिर, 232, तानसेन नगर
ग्वालियर।

26 नवम्बर, 1990

नाटक : उरुभंग

लेखक : भास

निर्देशिका : चित्रा मोहन

नाटक : अन्धेर नगरी

लेखक : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

निर्देशक : जुगल किशोर

उरुभंग

कथासार :–महाकवि भास रचित नाटक उरुभंग में महाभारत युद्ध के अठारहवें दिन का वर्णन है जबकि दोनों ही पक्षों के तमाम योद्धा युद्ध क्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। कौरव पक्ष में दुर्योधन और पांचों पांडव जीवित हैं। भीम और दुर्योधन में भीषण गदायुद्ध छिड़ता है। अन्ततः भीम कृष्ण के इंगित पर छलपूर्वक दुर्योधन की जंघा तोड़ डालते हैं।

नाटक में भास ने दुर्योधन को एक उत्तम नायक के रूप में प्रस्तुत किया है, जो अन्त समय में अपने किये क्रूर कार्यों का पश्चात्ताप करता है और बाद में उसे मोक्षगति प्राप्त होती है।

मंच पर

	पात्र		भूमिका
1.	ललित सिंह पोखरिया	—	सूत्रधार
2.	शीला चौरसिया	—	नटी, पौरवी
3.	राम चन्द्र सिंह	—	पारिपार्श्विक 1, बलदेव
4.	सुशील भोले	—	पारिपार्श्विक 2, अश्वत्थामा, कृष्ण
5.	तपन दास	—	योद्धा 1
6.	नरेन्द्र कुमार	—	योद्धा 2
7.	योगीश द्विवेदी	—	योद्धा 3
8.	योगेश पाठक	—	दुर्योधन
9.	विजय शुक्ला	—	भीम सेन
10.	सुनील जायसवाल	—	धृतराष्ट्र
11.	शैलजा कपूर	—	गान्धारी
12.	निशि पाण्डेय	—	दुर्जय
13.	सुरेश काला	—	अर्जुन
14.	अभिजीत कुमार मण्डल	—	विदुर

मंच परे

15.	मंच सज्जा	—	ललित सिंह पोखरिया
16.	मंच सामग्री	—	अभिजीत कुमार मण्डल, रामचन्द्र सिंह
17.	वेश-भूषा अभिकल्पना	—	नरगिस
18.	वेश-भूषा व्यवस्था	—	शैलजा कपूर
19.	रंगदीपन	—	अरुण त्रिवेदी
20.	प्रकाश संचालन	—	दलवीर सिंह
21.	तकनीशियन	—	केदारनाथ मिश्रा
22.	संगीत	—	रवि नागर, अखिलेश दीक्षित
23.	वादन	—	योगेश पाठक, योगीश द्विवेदी, एबनर सादिक
24.	प्रस्तुति दल	—	नरेन्द्र गुप्ता, सुशील भोले, अभिजीत, रामचन्द्र
25.	मंच प्रबन्धक	—	तपनदास

अंधेर नगरी

कथासार :–एक ऐसा राज्य जहाँ न्याय-व्यवस्था चौपट राजा के हाथों पड़कर कुछ इस तरह विकृत हो गयी है कि गोवरधनदास के रूप में निश्छलता की दुर्गति होती है और उसे अकारण ही फांसी तक पहुँचना पड़ता है। यहाँ आवश्यकता पड़ती है एक बुद्धिमान व्यक्ति की और संगठित जनाक्रोश की, जिसके फलस्वरूप चौपट राजा का अन्त होता है।

प्रदेश के नाट्य शिक्षण के विधिवत् एवं नियमित प्रशिक्षण हेतु वर्ष 1975 में भारतेन्दु नाट्य केन्द्र की स्थापना उत्तर प्रदेश शासन द्वारा की गयी जिसे बाद में भारतेन्दु नाट्य अकादमी का नाम दिया गया। तब से अकादमी द्वारा लगातार नियमित प्रशिक्षण कार्य किया जा रहा है। भारतेन्दु नाट्य अकादमी के अन्तर्गत वर्ष 1988 में प्रदेश सरकार द्वारा रंगमंडल की स्थापना की स्वीकृति प्रदान की गयी।

रंगमंडल का कार्य नाटक के माध्यम से जन-समुदाय के मूल स्तर तक मनोरंजन प्रदान करने के साथ ही उनमें शैक्षिक चेतना जागृत करना, तथा प्रदेश व देश की संस्कृति का बोध कराना है। उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु यह अपेक्षित है कि रंगमंडल प्रदेश के विभिन्न जिलों एवं ग्रामीण अंचलों में अपने कलाकारों द्वारा तैयार किये गये जनरुचिपरक एवं मनोरंजक नाटकों का मंचन जन-समुदाय के बीच जाकर स्वयं करे।

गत वर्ष प्रदेश के विभिन्न जिलों में रंगमंडल द्वारा प्रस्तुति-मंचन का कार्य सम्पन्न किया गया। इस वर्ष जिला बाराबंकी के ग्रामीण अंचलों में रंगमंडल द्वारा कार्य प्रारम्भ किया गया है।

मंच पर

	पात्र		भूमिका
1.	योगेश पाठक	—	महत
2.	सुशील भोले	—	नारायण दास
3.	विजय शुक्ला	—	गोवर्धनदास

पात्र		भूमिका
4. ललित सिंह पोखरिया	—	कबाबवाला, बनिया, राजा
5. एवनर सादिक	—	चनेवाला, मंत्री
6. नरेन्द्र गुप्ता	—	हलवाई, मुख्यमंत्री
7. शीला चौरसिया	—	मछली वाली
8. योगीश पाठक	—	पठान, मंत्री
9. शैलजा कपूर	—	सब्जी वाली, रानी
10. रामचन्द्र सिंह	—	चूरन वाला, चने वाला, कसाई, प्यादा
11. अभिजीत कुमार मंडल	—	जातवाला, सेवक, कारीगर, कोतवाल
12. निशि पाण्डेय	—	नारंगीवाली, फरियादी
13. सुनील जायसवाल	—	बनिया, भिश्ती, गड़रिया, प्यादा 2
14. तपन दास	—	मंत्री
15. सुरेश काला	—	सिपाही

मंच परे

16. मंच-प्रबंधक	—	तपन दास
17. वेश-भूषा	—	ललित, शैलजा
18. मुख-सज्जा	—	शीला, निशि
19. संगीत रचना	—	रवि नागर, अखिलेश दीक्षित
20. संगीत संचालन	—	योगेश पाठक, योगीश द्विवेदी
21. मंच सामग्री	—	अभिजीत, रामचन्द्र, सुनील
22. ध्वनि परिकल्पना निर्माण	—	मुनीष, अभिजीत

सम्पर्क :–
निदेशक
भारतेन्दु नाट्य अकादमी रंगमण्डल
बी–53, सेक्टर–ए, महानगर, लखनऊ

27 नवम्बर, 1990

नाटक : **पोस्टर**
लेखक : **डॉ० शंकर शेष**
निर्देशक : **टी०के० अग्रवाल**
संगीत निर्देशन : **देवकी नन्दन चटर्जी**
प्रस्तुति : **कला मंच परिवार, देहरादून**

पोस्टर

कथासार :– डॉ० शंकर शेष द्वारा लिखित नाटक "पोस्टर" में ऐसे गाँव की कहानी का चित्रण किया है जहाँ मजदूरों का शोषण पूँजीपतियों की छत्रछाया में फलता-फूलता जा रहा है। ऐसी स्थिति में वहाँ की महिला मजदूर चेती के हाथ एक पोस्टर लग जाता है, जिसमें मजदूरी बढ़ाने की बात लिखी होती है। मजदूर, मजदूरी बढ़ाने के लिए एक-जुट होकर आन्दोलन करते हैं और अन्ततः सफल होते हैं।

कलामंच परिवार :– देहरादून की प्रतिष्ठित एवं रंग-समर्पित संस्था "कला मंच परिवार" जिसने प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी पहचान को बनाये रखा है तथा दर्शकों में रंगकर्म के प्रति उत्साह पैदा किया है।

मंच पर

पात्र		भूमिका
1. तपन डे	—	पटेल
2. अश्विनी जैन, मुकेश भटनागर	—	सुखलाल
3. श्रीमती जागृति चटर्जी	—	चेती
4. गिरीश पान्थरी	—	कल्लू
5. नरेन्द्र शाह	—	गुरुजी, अखंडानन्द
6. दीपक कुमार	—	फारेस्ट ऑफीसर
7. बीर सिंह	—	मजदूर 1
8. वेद भारती	—	,, 2
9. मुकेश धस्माना	—	,, 3
10. के० के० शर्मा, अमित सिंह	—	,, 4
11. बालक सिंह	—	,, 5
12. आर० बी० लाल	—	,, 6
13. श्रीमती इन्द्रा	—	महिला मजदूर

मंच परे

1. पार्श्व स्वर	--	कु० मीना व्यास

2. वाद्य-वृन्द — अश्विनी कुमार/गुरमीत सिंह
3. प्रकाश परिकल्पना — महेन्द्र वर्मा
4. रूप सज्जा एवं वेश-भूषा — अरुण अग्रवाल
5. पार्श्व सहयोग — आदर्श अग्रवाल, संतोष त्रिपाठी, राजीव जैन, कुलवन्त छतवाल, रमेश डोबरियाल, अजय जान, कु० शबनम जैन, प्रमोद तिवारी
6. मंच व्यवस्था — ओम गैरोला, दीपक व्यास
7. निर्माण नियंत्रण — नरेन्द्र शाह

सम्पर्क :-

श्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता
(संयोजक)
कलामंच परिवार,
16-सीमेनट रोड, देहरादून

28 नवम्बर, 1990

नाटक : **चोर आयेगा दबे पांव**
लेखक : **के०पी० सक्सेना**
निर्देशक : **कुमुद नागर**
प्रस्तुति : **नटरंग आर्ट्स, लखनऊ**

चोर आयेगा दबे पांव

कथासार:-"चोर आयेगा दबे पांव" सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री के० पी० सक्सेना द्वारा लिखित एक हास्य-व्यंग्य नाटक है। नाटककार ने अपने चुटीले संवादों द्वारा मौजूदा हालातों पर बड़े ही सटीक ढंग से कटाक्ष किये हैं। नाटक के संवादों को हास्यरस से सराबोर करते हुए दर्शकों को हर क्षण मनोरंजक परिस्थितियों का एहसास कराया है।

नटरंग आर्ट्स :-प्रदेश की नाट्य संस्था जिसने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से उन उद्देश्यों की पूर्ति की है, जो सामाजिक रंग-संयोजन के लिये जरूरी है। संस्था रंगान्दोलन की एक सही दिशा तलाशने एवं श्रमसाध्य सार्थक प्रस्तुतियों के माध्यम से अपना सक्रिय योगदान प्रदान करने और अपना स्थान बनाने की दिशा में प्रयासरत है।

मंच पर

	पात्र		भूमिका
1.	रवीन्द्र श्रीवास्तव	—	तुफलन
2.	के० पी० सक्सेना/चन्द्रशेखर पाठक	—	चांद खाँ
3.	राजेश भदौरिया	—	जमलू
4.	कु० गीता मिश्रा	—	बेगम
5.	राजेन्द्र तिवारी	—	इन्स्पेक्टर
6.	कु० संगीता अग्रवाल	—	युवक चोर

मंच परे

7.	रूपसज्जा	—	भुवनेश श्रीवास्तव
8.	मंच-निर्माण	—	बशीर अहमद
9.	मंच सहायक	—	अशोक सिंह
10.	ध्वनि प्रभाव	—	निधि
11.	प्रकाश व्यवस्था	—	गिरीश श्रीवास्तव
12.	वेशभूषा	—	अशोक कुमार गांधी
13.	मंच-सामग्री	—	इन्द्र पाल सिंह
14.	प्रकाश सहायक	—	आकाश पाण्डेय
15.	प्रस्तुति नियंत्रक	—	फूल बिहारी रस्तोगी
16.	टीन मैनेजर	—	अजीत रस्तोगी

सम्पर्क :-

श्री राजेश भदौरिया
सचिव, नटरंग आर्ट्स, 556/52 सुजानपुरा, आलमबाग, लखनऊ

29 नवम्बर, 1990

नाटक : **हरूहीत**

लेखक : **बृजेन्द्र लाल शाह**

संगीत निर्देशक : **मोहन उप्रेती**

निर्देशक : **सुभाष उद्गाता**

प्रस्तुति : **पर्वतीय कला केन्द्र, नई दिल्ली**

हरूहीत

कथासार :–हरूहीत कुमाऊँ क्षेत्र की प्रेम, राजनीति, न्याय और नैतिकता के सवालों से जूझती हुयी लोकगाथा है जिसे गाकर प्रस्तुत किया जाता है। राजा समरूहीत के पाँच बेटे प्रजा पर तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। प्रजा उन्हें शाप देती है जिसके फलस्वरूप काला ज्वर उन सबको मार डालता है। दूसरी पत्नी से जन्मी सन्तान हरू अपने मामा के यहाँ रहता है जो इस शाप से बच जाता है तथा अपने राज्य में आकर सामन्तों का विरोध करता है एवं उनके आधिपत्य को समाप्त करता है।

पर्वतीय कला केन्द्र :–कुमाऊँ क्षेत्र के प्रतिभासम्पन्न कलाकारों की संस्था जो विगत कई वर्षों से दिल्ली में कुमाऊँ क्षेत्र की लोककलाओं पर केन्द्रित अपनी प्रस्तुतियों द्वारा कुमाऊँ क्षेत्र के लोगों में रंगकर्म के प्रति जागरूकता लायी है तथा जिसने आंचलिक रंगकर्म को आगे बढाने में उत्साह पैदा किया है।

मंच पर

	पात्र		**भूमिका**
1.	उमा वशिष्ठ	—	माँ
2.	नईमा उप्रेती, पुष्पा तिवारी, चन्द्रा विष्ट, कुसुम विष्ट, अनुकम्पा विष्ट	—	भाभियाँ
3.	अल्का बड़ोला	—	मालू
4.	पुष्पा तिवारी	—	विष-कन्या
5.	चन्द्रा विष्ट	—	मंगला
6.	हिमान्शु जोशी	—	हरूहीत
7.	गोविन्द पाण्डेय	—	समरूहीत
8.	गोपाल सिंह, गोपाल पाण्डेय, विजय उप्रेती दुष्यन्त कुमार, महेन्द्र लटवाल	—	समरू के लड़के
9.	महेन्द्र लटवाल, जीवान सिंह विष्ट, परमिन्दर रावत, नन्दन सिंह, आनन्द सिंह कुमाँउनी, घनश्याम भण्टिवाल, मुकेश सन्वाल, हरीश रावत, शिवकान्त	—	गुजराव के लोग (कोट-भोट)
10.	नन्दन सिंह	—	काला ज्वर
11.	गोपाल सिंह	—	थोकदार
12.	गोविन्द पाण्डेय, गोपाल, महेन्द्र लटवाल, नन्दन सिंह, दुष्यन्त कुमार	—	सामंत
13.	विजय उप्रेती	--	संवाहक

मंच परे

14.	मूल कृति	—	देवेन्द्र आर्या
15.	मुख सज्जा	—	ए० एस० कुमाँउनी
16.	मंच एवं प्रकाश	—	सुभाष उद्गाता

सम्पर्क :–

श्री मोहन उप्रेती
पर्वतीय कला केन्द्र,
110–एशिया हाउस,
नई दिल्ली–2

☐ आवरण : प्रेम कुमार शर्मा